

## पार्श्वनाथ स्त्रोत

नरेन्द्र फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पुजै भजै नाय शीशं ।  
 मुनीन्द्रं गणीन्द्रं नमे जोडि हाथं, नमो देव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥  
 गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुडावे, महा आगतै नागतै तू बचावे ।  
 महावीरतै युद्ध में तू जितावे, महा रोगतै बंधने तू छुडावे ॥ २ ॥  
 दुखी दुखहर्ता सुखी सुखकर्ता, सदा सेवको को महा नन्द भर्ता ।  
 हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषम डाकिनी विघ्न के भय अवाचं ॥ ३ ॥  
 दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने ।  
 महासंकटों से निकारे विधाता, सबै सम्पदा सर्व को देहि दाता ॥ ४ ॥  
 महाचोर को वज्र को भय निवारे, महपौन को पुंजतै तू उबारे ।  
 महाक्रोध की अग्नि को मेघधारा, महालोभ शैलेश को वज्र मारा ॥ ५ ॥  
 महामोह अंधेर को ज्ञान भानं, महा कर्म कांतार को धौ प्रधानं ।  
 किये नाग नागिन अधो लोक स्वामी, हरयो मान दैत्य को हो अकामी ॥ ६ ॥  
 तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनं, तुही दिव्य चिंतामणि नाग एनं ।  
 पशु नर्क के दुःखतै तू छुडावे, महास्वर्ग में मुक्ति में तू बसावे ॥ ७ ॥  
 करे लोह को हेम पाषण नामी, रटे नाम सो क्यों ना हो मोक्षगामी ।  
 करै सेव ताकी करै देव सेवा, सुने बैन सोही लहे ज्ञान मेवा ॥ ८ ॥  
 जपै जाप ताको नहीं प्राप लागे, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागे ।  
 बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपातै सरै काज मेरे ॥ ९ ॥

### दोहा

गणधर इंद्र न कर सके, तुम विनती भगवान ।

द्यानत प्रीति निहार के, कीजे आप सामान ॥ १० ॥

स्पंदन पारमार्थिक एवं सामाजिक उन्नयन समिति (रजि.)

28, विद्यानगर, उज्जैन (म.प्र.) पिन : 456010

Only WhatsApp Msg: +91-9424870644

Website//www.sanjayjain-guruji.com

E-mail: gurujishrisanjayjain@gmail.com